B-384
L-26
ETHICS

बौद्ध दर्शन

बौद्ध दर्शन की महायान शाखा का नैतिक आदर्श बोधिसत्व है। बोधिसत्व प्राणी मात्र के कल्याण के लिए सदैव प्रयत्नशील रहते हैं उनका जीवन करुणा एवं प्रज्ञा से संचालित है वे स्वयं को कष्ट देकर भी दूसरों के कष्टों को दूर करने का प्रयास करते हैं। वे करुणा के महासागर के रूप में जाने जाते हैं।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

वर्तमान में समाज में विद्यमान विसंगतियों और समस्याओं को दूर करने में बोधि-सत्व का आदर्श सहायक हो सकता है।

लोकसेवा के प्रति समर्पण भाव तथा समाज के कमजोर वर्गों के प्रति समानुभूति, सहिष्णुता व करुणा के भाव को बढ़ावा देने में।

शंकराचार्य

शंकराचार्य का दर्शन अद्वैतवाद कहलाता है, इसके अनुसार ब्रह्म ही एक मात्र सत है जगत अंतत: मिथ्या है जीव मूलत: ब्रह्म ही है ब्रह्म से भिन्न नहीं है।

शंकर का अद्वैतवाद मानव को नैतिक रूप से एकबद्ध करने का प्रयास करता है।

यह समाज में विद्यमान छुआछूत, ऊँच-नीच, लिंग भेद आदि नकारात्मक प्रवृतियों को दूर करने में मददगार है।

यह मानव मात्र के मध्य एकता का संदेश देता है।

शंकराचार्य ने भारत को सांस्कृतिक रूप से एकबद्ध करने का प्रयास किया उन्होंने

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

भारत की 4 दिशाओं में 4 मठों की स्थापना की जो भारत की सांस्कृतिक एकता के प्रतीक हैं-

- → उत्तर - ज्योतिर पीठ
- → दाक्षिण - श्रृंगेरी पीठ
- → पूरब - गोवर्धन पीठ
- → पश्चिम - शारदा पीठ

वेदांत दर्शन मानव के जीवन मूल्यों को जाग्रत करने का प्रयास करता है, यह मानता है कि मानव के भीतर एक महान आध्यात्मिक शक्ति है जिसके माध्यम से सामाजिक एकता की प्राप्ति की जा सकती है।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
KHAN SIR

विश्व के नैतिक चिंतक और विचारक :-

ग्रीक दर्शन में सुकरात से पूर्व सोफिस्टो ने नैतिक सापेक्षतावाद का समर्थन किया। प्रसिद्ध सोफिस्ट विचारक प्रोटोगोरस का कहना है कि मनुष्य ही सभी वस्तुओं का मानदण्ड है। इसके अनुसार मनुष्य ही नैतिकता की कसौटी है आशय है कि एक मनुष्य को जो सत्य प्रतीत होता है वह उसके लिए सत्य है और जो दूसरे के लिए सत्य प्रतीत होता है वो दूसरे के लिए सत्य है, इस प्रकार यहाँ नैतिकता की सापेक्षिक एवं आत्मनिष्ठ अवधारणा को स्वीकार किया गया है, इनके अनुसार नैतिकता का कोई सार्वभौम वस्तुनिष्ठ आधार नहीं है।

मनुष्य अपनी आवश्यकताओं

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

और सुविधाओं के अनुसार नियम बनाता है और उन्हें सही मानता है, साथ ही वह उसमें समय, स्थान व परिस्थिति के अनुसार संशोधन भी करता है क्योंकि यहाँ मानव को ही नैतिकता का आधार या निर्धारक माना गया है इसलिए यहाँ मानववाद का समर्थन किया गया है।

यदि प्रत्येक मनुष्य स्वयं ही उचित या अनुचित के निर्धारण का आधार हो जाएगा तो फिर समाज में अराजकता उत्पन्न होगी तथा शांति व न्याय की स्थापना नहीं हो पाएगी।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

S:

ग्रीक दर्शन

⇓

सुक्रात, प्लेटो, अरस्तू

⇓

इनके काल को ग्रीक दर्शन का स्वर्ण युग कहा जाता है, इनके अनुसार विवेक पूर्ण जीवन जीना चाहिए तभी आनंद की प्राप्ति होगी।

KGS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR IAS

सद्गुण →

सुक्रात के अनुसार सद्गुण आत्मा के नैतिक विकास और चरित्र की उत्कृष्टता को दर्शाता है, यह ज्ञान रूप, वस्तुनिष्ठ और सार्वभौम है, बौद्धिक सुख की प्राप्ति सद्गुण के आचरण से ही संभव है।

सद्गुण और ज्ञान में संबंध → सुक्रात

मतानुसार ज्ञान और सद्गुण में अनिवार्य एवं अभेद संबंध है, ज्ञान सद्गुणी होने की अनिवार्य एवं पर्याप्त शर्त है। यहाँ ज्ञान का आशय सत्य-असत्य, शुभ-अशुभ, कर्तव्य-अकर्तव्य के विभेद ज्ञान से है जिसे ऐसा ज्ञान है वह कभी गलत नहीं कर सकता, इस प्रकार सुक्रात मतानुसार ज्ञान ही सद्गुण है।

सुक्रात मतानुसार व्यक्ति स्वभाविक रूप से आनंदमय जीवन जीना चाहता है, आनंद शुभ कर्मों पर निर्भर है, शुभ कर्मों को करने के लिए शुभ का ज्ञान आवश्यक है अत: ज्ञान शुभ कर्मों का सार है, इस रूप में ज्ञान सद्गुण है।

सुक्रात मतानुसार जिस व्यक्ति में ज्ञान

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

होता है वह सदैव आचरण में सद्गुण को व्यक्त करेगा क्योंकि ज्ञान दृढ़ विश्वास के रूप में होता है, जिसकी अभिव्यक्ति व्यक्ति के आचरण में अनिवार्य रूप से होती है इसी संदर्भ में यह कहा जाता है कि ज्ञान ही सद्गुण है और सद्गुण ही ज्ञान है।

KGS KHAN GLOBAL STUDIES IAS Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

आलोचना →

ज्ञान और उसके अनुसार आचरण में अनिवार्य संबंध नहीं है, कई बार ज्ञानी व्यक्ति भी बुरे कर्मों का संपादन करता है।

अरस्तू मतानुसार सद्गुण के ज्ञान के साथ-साथ उसका अभ्यास भी आवश्यक है तभी उसकी अभिव्यक्ति आचरण के रूप में होगी।

एक <u>अपरीक्षित जीवन</u> जीने योग्य नहीं है।
↓
जिसके जीवन का कोई लक्ष्य या प्रयोजन नहीं है। यंत्रवत या पशुवत जीवन जी रहा है, सही- गलत का बोध नहीं है, अज्ञानता है, दुर्गुणी जीवन।

<u>परीक्षित जीवन</u> →

जीवन का लक्ष्य व उद्देश्य हो, जीवन/सच्चाई को जानने, समझने व अनुसरण करने का भाव हो, प्रश्न पूछने और जिज्ञासाओं की तार्किक संतुष्टि की प्रवृति हो, सही- गलत का पता लगाने, शुभ-अशुभ के भेद को जानने का प्रयास हो, स्वयं को जानने की जिज्ञासा हो, जीवन में आत्मनिरीक्षण, आत्म जागरूकता, आत्मनियमन, आत्म मूल्यांकन की अभिवृति हो, अपनी क्षमता व योग्यता का

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

विभिन्न क्षेत्रों में बेहतर उपयोग ताकि अंतर्निहित संभावनाओं को साकारित किया जा सके। परीक्षित जीवन विवेकपूर्ण जीवन है जो सत्य और आनंद की ओर ले जाता है।

KGS KHAN GLOBAL STUDIES IAS
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR